नुक्कड़ नाटक

पंचायत ने दी नई पहचान
अब न हो कोई टी. बी. से परेशान

राज्य टीबी कार्यालयों द्वारा नुक्कड़ नाटक पर
आधारित सुझाई गई कहानियां

गाँव की चौपाल का दृश्य

ढोल नगाड़े की आवाज़ – बजाता हुआ मुनादी

मुनादीः सुनो, सुनो, सुनो। सभी गाँव वालों को सूचित किया जाता है कि कल का दिन न भूलें। जी हाँ कल बुधवार है और गाँव में ग्राम स्वास्थ्य और पौष्टिकता दिवस का आयोजन किया गया है। सभी लोग आयें और घर के सब लोगों को लेकर आयें। याद रखें कि कल का दिन आपका है, आपके स्वास्थ्य के लिये है।

(ढोल नगाड़े बजाता हुआ मुनादी चला जाता है)

सूत्रधार का मंच पर प्रवेश

सूत्रधारः तो भाइयो और बहनो, सुना आपने। कल बुधवार है और कल ग्राम स्वास्थ्य और पौष्टिकता दिवस का आयोजन किया गया है। इसे अंग्रेजी में वीएनएडी कहते हैं। इस दिन गाँव के लोग एक जगह जुटते हैं और अपने स्वास्थ्य की जांच कराते हैं। इस दिन डॉक्टर, आशा बहनें, एएनएम कार्यकर्त्ता और गाँव के पंचायत सदस्य गाँव वालों से उनके स्वास्थ्य के बारे में जानकारी लेते हैं। और अगर किसी को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो तो सभी लोग मिलकर इसका हल ढूँढते हैं। तो चलिये हम भी शामिल होते हैं वीएनएडी में...

(आंगनवाड़ी केन्द्र के पास सभी गाँव वाले जुटे हैं। चौपाल पर पंच और प्रधानजी बैठे हैं। उनके बगल में आशा और एएनएम कार्यकर्त्ता भी बैठे हुए हैं। सफेद लिबाज़ में डॉक्टर साहब भी बैठे हैं)

प्रधान ठाकुर जीः (आशा बहन से) : क्यों आशा बहन, गाँव में सब कुशल मंगल तो है ना।

आशा बहनः नहीं ठाकुर साहब, सब ठीक नहीं है। लाखन का परिवार मुश्किल में है।

प्रधान ठाकुर जीः क्यों, क्या हुआ लाखन को?

आशा बहनः लाखन की हालत दिन–ब–दिन बिगड़ती जा रही है। दिन भर खांसता रहता है। अब तो काम करने के लिये खेतों पर भी नहीं जाता।

प्रधान ठाकुर जीः लाखन को खांसी हो रही है तो इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है। कुछ दिनों में खांसी ठीक हो जाएगी।

आशा बहनः दो हफ्ते से ज्यादा हो गये हैं पर अभी तक वो ठीक नहीं हुआ है। बीच में उसने वैदजी से दवा भी ली थी, लेकिन फर्क नहीं पड़ा।

प्रधान ठाकुर जीः अच्छा लाखन है कहाँ, उसी से पूछता हूँ। लाखन... लाखन... कहाँ है तू

(गाँववालों के बीच से लाखन उठता है)

लाखनः जी सरकार, मैं यहाँ हूँ (खांसते हुए कहता है)।

ठाकुर जीः क्या हुआ तेरी तबियत को।

लाखनः जी सरकार, इस बार ऐसी खांसी हुई है कि छोड़ने का नाम ही नहीं ले रही।

ठाकुर साहबः चलो अच्छा है कि तू आज आ गया है। (डॉक्टर की ओर देखते हुए...) डॉक्टर साहब लाखन को क्या हुआ है जरा इसको देखकर बताइये।

डॉक्टरः क्यों लाखन तेरी दो हफ्ते से ज्यादा खांसी की बात तो मैंने सुन ली है और क्या तकलीफ है तुझे।

लाखनः जी डॉक्टर साहब, पिछले कुछ दिनों से कभी–कभी खांसते समय खून आ जाता है और रात के समय बुखार हो जाता है। वजन घटता जा रहा है और भयंकर कमज़ोरी हो रही है। अब तो मैं खेत पर काम करने भी नहीं जा पा रहा हूँ।

डॉक्टरः (ठाकुर जी की ओर देखते हुए) ठाकुर साहब, लाखन के लक्षण तो टीबी (क्षय रोग) वाले लग रहे हैं। इसके कफ की जांच करानी होगी तभी पता चल पायेगा।

ठाकुर जीः टीबी?? इस रोग के बारे में सुना तो मैंने भी है लेकिन बहुत ज्यादा नहीं जानता। टीबी होती कैसे है और क्या इसका इलाज हो सकता है?

डॉक्टरः (सामने की ओर देखकर) टीबी की बीमारी किसी को भी हो सकती है – बच्चे, जवान, बूढ़े, पुरुष, स्त्री किसी को भी। प्रदूषित वातावरण में टीबी के कीटाणु मौजूद रहते हैं और हवा के द्वारा फैलते हैं। मगर दो हफ्ते से ज्यादा खांसी हो तो फौरन अपने कफ की जांच करानी चाहिए। इसके कुछ लक्षण हैं जैसे – खांसी के साथ खून आना, रात के समय बुखार हो जाना, वजन घटना और बेहद कमज़ोरी होना। अगर इलाज नहीं करवाया तो जान भी जा सकती है। सबसे अच्छी बात ये है कि इसका पूरा और पुख्ता इलाज है और सरकारी अस्पतालों में टीबी का इलाज मुफ्त किया जाता है।

ठाकुर जीः समझ गया, डॉक्टर साहब। यानि लाखन का इलाज संभव है। इलाज के लिये लाखन को करना क्या होगा?

डॉक्टरः सबसे पहले तो लाखन को टीबी केन्द्र जाकर अपने बलगम की जांच करानी होगी। जांच में अगर टीबी के कीटाणु पाये गये तो टीबी केन्द्र से उसे मुफ्त डॉट्स की दवाइयां मिलेंगी। डॉट्स के तहत उसका 6 से 8 महीने तक इलाज चलेगा और लाखन पूरी तरह ठीक हो जायेगा।

ठाकुर साहबः (लाखन की ओर देखते हुए) लाखन तू कल ही नजदीकी टीबी केन्द्र जाकर अपनी बलगम की जांच करा ले।

लाखनः लेकिन ठाकुर साहब, टीबी केन्द्र तो यहां से बहुत दूर है। वहां आने–जाने में पूरा दिन लग जायेगा। अब ऐसी हालत में मैं कैसे जा पाऊंगा।

ठाकुर जीः वो तो ठीक है लेकिन इलाज तो कराना पड़ेगा ना लाखन।

लाखनः सरकार, डॉक्टर साहब से कहकर अगर आप गांव में ही इसकी व्यवस्था करवा देते तो कितना अच्छा होता।

ठाकुर जीः बात तो सही है तेरी। यहां आस–पास के 30 गाँवों में कोई भी प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र नहीं है। आज भी इलाज के लिये लोगों को शहर जाना पड़ता है। क्यों भाइयो, क्यों ना ब्लॉक विकास अधिकारी से बात करके पास में ही चिकित्सा केन्द्र खुलवा दिया जाये। क्या कहते हो?

(दूसरे पंच और गाँव वाले हाँ में हाँ मिलाते हैं)

ठाकुर जीः तो कल ही मैं जाकर ब्लॉक विकास अधिकारी से बात करता हूँ।

दृश्य समाप्त होता है और सूत्रधार प्रवेश करता है

सूत्रधारः तो आपने देखा गाँव में लाखन की हालत हर दिन खराब होती जा रही है। लेकिन इलाज तो दूर, जांच के लिये भी गाँव में चिकित्सा केन्द्र नहीं है। ठाकुर जी ने तो ब्लॉक विकास अधिकारी से मिलकर जांच केन्द्र खुलवाने की ठान ली है। आइये देखें क्या ठाकुर जी कामयाब हो पाते हैं...

(दृश्य 2)

(ऑफिस का दृश्य, शर्ट पैन्ट में बैठे हुए ब्लॉक विकास अधिकारी – श्री भास्कर सहाय – प्रधान ठाकुर जी से बात कर रहे हैं)।

भास्करः कैसे हैं ठाकुर जी। गांव में सब ठीक–ठाक तो है। कैसे आना हुआ आज।

ठाकुर जीः भास्कर जी, आपसे एक काम था। हम गाँव वालों ने फैसला किया है कि आस–पास के गाँवों के लिये नजदीक में एक प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र होना चाहिए। इसी सिलसिले में आज आपसे मिलने आया हूँ।

भास्करः हाँ हाँ, ठाकुर साहब। हम तो बैठे ही हैं जनता की सेवा करने के लिये। लेकिन इस काम में कुछ महीनों का समय और कुछ रुपये खर्च होंगे। आप तो जानते ही हैं कि ऐसे कामों में सबको खुश करना पड़ता है।

ठाकुर जीः भास्कर जी, सरकार से स्वास्थ्य सुरक्षा प्राप्त करना नागरिकों का अधिकार है; और इसके लिए हर संभव प्रयास करना सरकार की जिम्मेदारी है। फिर भी आपको आपत्ति है तो बाहर गाँव वालों और विधायक जी से यही बात कह दीजिए।

भास्कर जीः क्या!! विधायक जी भी आये हैं? अरे ठाकुर साहब आप तो ऐसे ही गुस्सा हो गये। सभी की यही राय है तो जल्दी ही मैं गाँव में प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र खुलवाने का प्रयास करता हूँ। आप निश्चिन्त होकर जाइये।

ठाकुर जीः धन्यवाद भास्कर जी। हमें आपसे यही उम्मीद थी। मैं चलता हूँ नमस्कार

भास्कर जीः नमस्कार, ठाकुर जी।

दृश्य खत्म

(सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधारः तो भाइयो आपने देखा, प्रधानजी ने गाँव वालों की गुजारिष मान ली और विधायकजी और ब्लॉक विकास पदाधिकारी की सहायता से गाँव के पास में प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र खुलवाने में सफल हो गये। आप भी अपने गाँव में ऐसी सुविधा की मांग कर सकते हैं? आखिर स्वस्थ रहना आपका अधिकार है और आपके लिये स्वास्थ्य केन्द्र खोलना सरकार का कर्त्तव्य। तो आइये देखते हैं लाखन ठीक हुआ या नहीं।

(दृश्य 3)

(गाँव का प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र : कुछ मरीज बैठे हुए हैं। ठाकुरजी उधर से गुजर रहे हैं; तभी उनकी नज़र लाखन पर पड़ती है।)

ठाकुर जीः अरे लाखन कैसा है रे तू?

लाखनः (हाथ जोड़ते हुए) आपकी दया है ठाकुर साहब। आप की ही मेहरबानी से मेरा टीबी का इलाज हो रहा है। आप नहीं होते तो मेरे बीवी–बच्चे रोते रह जाते।

ठाकुर जीः अरे मेरे अकेले के करने से कुछ नहीं हुआ। यह तो सभी गाँव वालों के समर्थन और विधायक जी की मदद से संभव हुआ है।

लाखनः जी ठाकुर साहब, अगर ये टीबी केन्द्र नहीं खुला होता तो कितने ही गाँव वाले इस रोग की चपेट में आ गये होते। अब देखिये, सभी का इलाज हो रहा है।

ठाकुर जीः तू बता, तू दवाइयां तो नियमित रूप से ले रहा है।

लाखनः जी ठाकुर साहब, मैं अपनी दवाइयां नियमित रूप से स्वास्थ्य केन्द्र आकर लेता हूँ। और अब तो मैं बहुत ठीक हो गया हूँ। डॉक्टर साहब कहते हैं कि अगले तीन महीने में पहले की तरह ही तंदुरूस्त हो जाऊंगा।

ठाकुर जीः बहुत अच्छी खबर सुनाई तूने। ठीक होने के बाद, लाखन तेरी जिम्मेदारी बनती है कि तू दूसरे टीबी के मरीजों के बीच जागरूकता फैलाये ताकि वे भी अपना इलाज करवा सकें।

लाखनः हाँ हाँ मालिक। मैंने भी यही सोच रखा है। टीबी को हम जड़ से उखाड़ देंगे और हम टीबी को मिलकर रोकेंगे।

ठाकुर जीः ठीक कहता है तू लाखन। टीबी रुकेगी मिलके हम रोकें जो।

दृश्य खत्म

(सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधारः तो भाइयो और बहनो आपने देखा – लाखन ठीक होने लगा है। साथ ही गाँव के दूसरे मरीजों का भी इलाज हो रहा है। और ये सब इसलिये हो पाया क्योंकि गाँव के लोगों ने एकजुट होकर गाँव में स्वास्थ्य केन्द्र खुलवाया। अगर आपके गाँव में भी टीबी केन्द्र नहीं है तो अपने प्रधानजी से इसकी चर्चा कीजिए।

याद रखिये आपका स्वास्थ्य आपके ही हाथ में है।

टीबी-
पक्के इलाज का
पक्का वादा. अक्षय

अधिक जानकारी के लिए निम्न पते पर संपर्क करें:

केंद्रीय टीबी प्रभाग

स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
निर्माण भवन
नई दिल्ली – 110011
www.tbcindia.org